अंकन योजना
पूरी तरह से गोपनीय
(केवल आंतरिक एवं प्रतिबंधित उपयोग के लिए)
सीनियर सेकेंडरी स्कूल पूरक परीक्षा, 2025
विषय का नाम: इतिहास (उप कोड-027) (क्यू.पी. कोड 61/S/1)

सामान्य निर्देश: -

1	आप जानते ही हैं कि अभ्यर्थियों के वास्तविक और सही मूल्यांकन में मूल्यांकन सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी सी गलती गंभीर समस्याओं का कारण बन सकती है जिसका असर अभ्यर्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और शिक्षण पेशे पर पड़ सकता है। गलतियों से बचने के लिए, आपसे अनुरोध है कि मूल्यांकन शुरू करने से पहले, स्पॉट मूल्यांकन दिशानिर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझें।
2	**"मूल्यांकन नीति एक गोपनीय नीति है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं, मूल्यांकन और कई अन्य पहलुओं की गोपनीयता से संबंधित है। किसी भी तरह से इसका सार्वजनिक रूप से लीक होना परीक्षा प्रणाली को पटरी से उतार सकता है और लाखों उम्मीदवारों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। इस नीति/दस्तावेज़ को किसी के साथ साझा करने, किसी पत्रिका में प्रकाशित करने और समाचार पत्र/वेबसाइट में छापने आदि पर बोर्ड और आईपीसी के विभिन्न नियमों के तहत कार्रवाई हो सकती है।"**
3	मूल्यांकन अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया जाना चाहिए। यह किसी की अपनी व्याख्या या किसी अन्य विचार के अनुसार नहीं किया जाना चाहिए। अंकन योजना का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। **हालाँकि, मूल्यांकन करते समय, जो उत्तर नवीनतम जानकारी या ज्ञान पर आधारित हैं और/या नवीन हैं, उनकी सत्यता का अन्यथा मूल्यांकन किया जा सकता है और उन्हें उचित अंक दिए जा सकते हैं। कक्षा बारहवीं में, दो योग्यता-आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय, कृपया दिए गए उत्तर को समझने का प्रयास करें और यदि उत्तर अंकन योजना के अनुसार नहीं है, लेकिन परीक्षार्थी द्वारा सही योग्यता दर्शाई गई है, तो भी उचित अंक दिए जाने चाहिए।**
4	अंकन योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मूल्य अंक दिए गए हैं। ये केवल दिशानिर्देश हैं और संपूर्ण उत्तर नहीं हैं। छात्र अपनी अभिव्यक्ति स्वयं व्यक्त कर सकते हैं और यदि अभिव्यक्ति सही है, तो उसके अनुसार उचित अंक दिए जाने चाहिए।
5	प्रधान परीक्षक को पहले दिन प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता द्वारा मूल्यांकित प्रथम पाँच उत्तर पुस्तिकाओं का अवलोकन करना होगा, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि मूल्यांकन अंकन योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार किया गया है। यदि कोई भिन्नता हो, तो विचार-विमर्श और चर्चा के बाद उसे शून्य कर दिया जाना चाहिए। मूल्यांकन के लिए शेष उत्तर पुस्तिकाएँ केवल यह सुनिश्चित करने के बाद ही दी जाएँगी कि प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता के अंकन में कोई महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं है।
6	✓) का निशान नहीं लगाएँगे। मूल्यांकन करते समय ऐसा लगता है कि उत्तर सही है और कोई अंक नहीं दिए जाएँगे। **यह सबसे आम गलती है जो मूल्यांकनकर्ता करते हैं।**
7	यदि प्रश्न में भाग हैं, तो कृपया प्रत्येक भाग के लिए दाईं ओर अंक दें। प्रश्न के विभिन्न भागों के लिए दिए गए अंकों का योग करके उन्हें बाईं ओर हाशिये में लिखकर गोला बना दें। इसका कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए।
8	यदि किसी प्रश्न में कोई भाग नहीं है, तो अंक बाएं हाशिये पर दिए जाने चाहिए और उसे घेर दिया जाना चाहिए। इसका भी कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए।
9	**"अतिरिक्त प्रश्न"** लिखकर काट दिया जाना चाहिए ।

10	किसी त्रुटि के संचयी प्रभाव के लिए कोई अंक नहीं काटा जाएगा। इसके लिए केवल एक बार ही दंड दिया जाएगा।
11	अंकों का पूर्ण पैमाना __80_____ _(उदाहरण के लिए प्रश्न पत्र में दिए गए 0 से 80/70/60/50/40/30 अंक) का उपयोग करना होगा। यदि उत्तर योग्य हो, तो कृपया पूर्ण अंक देने में संकोच न करें।
12	प्रत्येक परीक्षक को अनिवार्य रूप से पूरे कार्य समय अर्थात प्रतिदिन 8 घंटे मूल्यांकन कार्य करना होगा तथा मुख्य विषयों में प्रतिदिन 20 उत्तर पुस्तिकाओं तथा अन्य विषयों में प्रतिदिन 25 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करना होगा (विवरण स्पॉट दिशा-निर्देशों में दिया गया है)। यह कम पाठ्यक्रम तथा प्रश्न-पत्र में प्रश्नों की संख्या को ध्यान में रखते हुए किया गया है।
13	सुनिश्चित करें कि आप परीक्षक द्वारा अतीत में की गई निम्नलिखित सामान्य प्रकार की गलतियाँ न करें:- ● उत्तर पुस्तिका में उत्तर या उसका कोई भाग बिना मूल्यांकन के छोड़ देना। ● किसी उत्तर के लिए निर्धारित अंक से अधिक अंक देना। ● किसी उत्तर पर दिए गए अंकों का गलत योग। ● उत्तर पुस्तिका के अंदर के पृष्ठों से अंकों का गलत स्थानांतरण मुख्य पृष्ठ पर होना। ● शीर्षक पृष्ठ पर प्रश्न के अनुसार कुल योग गलत है। ● शीर्षक पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का गलत योग। ● गलत कुल योग. ● शब्दों और आंकड़ों में अंक मेल नहीं खा रहे हैं/समान नहीं हैं। ● उत्तर पुस्तिका से ऑनलाइन पुरस्कार सूची में अंकों का गलत स्थानांतरण। ● उत्तरों को सही के रूप में चिह्नित किया गया है, लेकिन अंक नहीं दिए गए हैं। (सुनिश्चित करें कि दायाँ टिक मार्क सही और स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। यह केवल एक रेखा होनी चाहिए। गलत उत्तर के लिए X का चिह्न भी ऐसा ही है।) ● उत्तर का आधा या एक भाग सही तथा शेष गलत चिह्नित किया गया, लेकिन कोई अंक नहीं दिया गया।
14	उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते समय यदि उत्तर पूर्णतः गलत पाया जाए तो उस पर क्रॉस (X) का निशान लगाकर शून्य (0) अंक दिया जाना चाहिए।
15	किसी भी अनिर्धारित भाग, अंकों को शीर्षक पृष्ठ पर न ले जाना, या कुल योग में अभ्यर्थी द्वारा पाई गई त्रुटि, मूल्यांकन कार्य में लगे सभी कर्मियों और बोर्ड की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाएगी। इसलिए, सभी संबंधितों की प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए, यह पुनः दोहराया जाता है कि निर्देशों का सावधानीपूर्वक और विवेकपूर्ण ढंग से पालन किया जाए।
16	परीक्षकों को वास्तविक मूल्यांकन शुरू करने से पहले " **स्पॉट मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश** " **में दिए गए दिशानिर्देशों से परिचित होना चाहिए।**
17	प्रत्येक परीक्षक यह भी सुनिश्चित करेगा कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन किया गया है, अंक शीर्षक पृष्ठ पर अंकित किए गए हैं, सही योग किया गया है तथा अंकों और शब्दों में लिखा गया है।
18	अभ्यर्थी निर्धारित प्रसंस्करण शुल्क का भुगतान करके अनुरोध करने पर उत्तर पुस्तिका की फोटोकॉपी प्राप्त करने के हकदार हैं। सभी परीक्षकों/अतिरिक्त प्रधान परीक्षकों/प्रधान परीक्षकों को एक बार फिर याद दिलाया जाता है कि वे यह सुनिश्चित करें कि मूल्यांकन प्रत्येक उत्तर के लिए अंकन योजना में दिए गए मान बिंदुओं के अनुसार सख्ती से किया जाए।

अंकन योजना 2025

इतिहास (027)

(क्यूपी कोड : 61/S/1)

नोट: अंकन योजना में उल्लिखित पृष्ठ संख्याएँ नवीनतम एन.सी.ई.आर. टी ई-बुक से ली गई हैं।

क्र. सं.	मूल्य बिंदु	अध्याय / पृष्ठ संख्या	एम केएस
	खंड क **(बहु विकल्पीय प्रश्न)**		
1	(a) I और II	अध्याय - 1, पृष्ठ 17	1
2	(c) इसमें ग्रंथ के सभी क्षेत्रीय रूपों पर शोध किया	अध्याय 3, पृष्ठ 54	1
3	(c) I और IV	अध्याय 1, पृष्ठ 20	1
4	(b) चोल, चेर , पांड्य	अध्याय - 2, पृष्ठ 35	1
5	(b) a-iv, b-iii, c-ii, d-i	अध्याय - 2, पृष्ठ 44,45	1

6	(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।	अध्याय - 3, पृष्ठ 60	1
7	(c) पुरोहित-राजा **या** **निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित अभ्यर्थियों के लिए है, प्रश्न संख्या 7 के स्थान पर।** (b) पाकिस्तान	अध्याय-1,पृष्ठ 16 अध्याय-1, पृष्ठ 2	1 1
8	(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।	अध्याय - 5, पृष्ठ 116	1
9	(a) I और II	अध्याय - 5, पृष्ठ 118	1
10	(d) I, II और III	अध्याय-6, पृष्ठ 153,155	1
11	(c) भजन	अध्याय - 6, पृष्ठ 163	1
12	(d) जमा	अध्याय - 8, पृष्ठ 213	1
13	One mark to be given to all.		1

14	(A) निकोलो डी काँन्ती– इटली	अध्याय-7, पृष्ठ 176	1
15	(a) वाजिद अली शाह का कुशासन	अध्याय 10, पृष्ठ 266	1
16	(d) III, I, II, IV	अध्याय-9, पृष्ठ 241, 242	1
17	(b) अहमदुल्लाह शाह	अध्याय-10, पृष्ठ 263	1
18	(b) a-iii, b-ii, c-iv, d-i	अध्याय-12, पृष्ठ 330-333	1
19	(c) जवाहरलाल नेहरू	अध्याय - 12, पृष्ठ 322	1
20	(c) I, III, IV, II	अध्याय - 11, पृष्ठ 314	1
21	(b) सुभद्रा कुमारी चौहान	अध्याय-10, पृष्ठ 283	1

	खंड- ख **(लघु उत्तरीय प्रश्न)**		
22	**(a) इतिहासकारों ने हड़प्पा की मुहरों को विशिष्ट कलाकृति माना है।" इस कथन की परख कीजिए ।** उत्तर : i.सेलखड़ी से बनी वर्गाकार या आयताकार आकार की मुहरें। ii. लेखन (लिपि का अर्थ स्पष्ट न हो पाना) और शिल्प कौशल का प्रमाण प्रदान करें। iii. उस प्राधिकारी के अस्तित्व को इंगित करें जिसने शक्ति जारी की/प्रयोग किया। iv. मेसोपोटामिया के साथ व्यापार के साक्ष्य, मेसोपोटामिया में हड़प्पा की मुहरें मिलीं और इसके विपरीत; v. मुहरों पर नाव की छवि. vi. हड़प्पावासियों की मान्यताओं को प्रतिबिंबित कर सकता है - कूबड़ वाला बैल, आदि शिव। vii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु ((मूल्यांकन किए जाने वाले कोई तीन अंक)	अध्याय 1, पृष्ठ 15	3
	या **(ख) " हड़प्पावासी अपनी उन्नत नगरीय योजना के लिए जाने जाते थे।" उपयुक्त तर्कों के साथ इसे न्याय संगत ठहराइए।** i. बस्ती दो भागों में विभाजित थी, एक छोटा लेकिन ऊंचा और दूसरा बहुत बड़ा लेकिन निचला। (दुर्ग और निचला शहर) ii. इमारतें मिट्टी की ईंटों के चबूतरों पर बनाई गई थीं। iii. निचला शहर ऊपरी शहर से अलग था और उसे चारदीवारी से घेर दिया गया था।	अध्याय 1, पृष्ठ 5-7	3

	iv. सभी निर्माण कार्यों के लिए मानकीकृत अनुपात में ईंटों के उपयोग की विस्तृत योजना का संकेत दिया गया है। v. सड़कें और गलियाँ लगभग ग्रिड पैटर्न के अनुरूप बनाई गई थीं। vi. जल निकासी व्यवस्था की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी। vii. पहले सड़कें और नालियाँ बिछाई गईं और फिर घर बनाए गए। हर घर की कम से कम एक दीवार सड़क के किनारे थी। viii. निर्माण कार्य के लिए बहुत बड़े पैमाने पर श्रमिकों को जुटाने की आवश्यकता होगी। ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु? (मूल्यांकन किए जाने वाले कोई तीन अंक)		
23.	**प्राचीन भारतीय समाज को समझने के स्रोत के रूप में महाभारत के महत्व का मूल्यांकन कीजिए।** i. पाठ्य सामग्री हमें उन दृष्टिकोणों और प्रथाओं को एक साथ जोड़ने का अवसर देती है, जिन्होंने सामाजिक इतिहास को आकार दिया। ii. पाठ में विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए व्यवहार के मानदंड निर्धारित करने वाले खंड भी शामिल हैं iii. सामाजिक-सांस्कृतिक तत्व- पाठ में सामाजिक पदानुक्रम और लिंग भूमिका को दर्शाता है। iv. पारिवारिक संरचनाएँ v. पितृवंश vi. माताओं और पत्नियों के रूप में महिलाओं की स्थिति। vii. विवाह के प्रकार viii. विवाह के नियम ix. वर्ण व्यवस्था- चार मुख्य वर्णों का विभाजन x. वर्ण - निषाद -वनवासियों से परे एकीकरण । जैसे . एकलव्य xi. वर्णों से परे एकीकरण - राक्षस - भीम का हिडिम्बा से विवाह अछूत और चांडाल । xii. सत्ता में गैर-क्षत्रिय राजाओं की उपस्थिति। xiii. गोत्र मानदंड. xiv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु कोई भी 3 अंक का मूल्यांकन किया जाना है।	अध्याय-3	3
24.	**" चोल शासकों ने भक्ति आंदोलन और ब्राह्मणवादी परंपराओं को अपना समर्थन दिया।" कथन को स्पष्ट कीजिए।** i. चोल शासकों (9 वीं -*13वीं शताब्दी*) *ने ब्राह्मणवादी और* भक्ति परंपराओं को समर्थन दिया। ii. भूमि अनुदान देना।	अध्याय-6, पृष्ठ 146	3

	iii. विष्णु और शिव के लिए मंदिर का निर्माण। iv. चिदंबरम, तंजावुर और गंगई कोंडा चोलपुरम में भव्य शिव मंदिर उनके संरक्षण में बनाए गए थे v. कांस्य में शिव की शानदार प्रतिमाएं नयनारों से प्रेरित थीं । vi. उदाहरण के लिए, चोल राजाओं ने अक्सर दैवीय सहायता का दावा करने का प्रयास किया । vii. उन्होंने पत्थर और धातु की मूर्तियों से सुसज्जित भव्य मंदिरों का निर्माण करके अपनी शक्ति और स्थिति का प्रदर्शन किया, ताकि इन लोकप्रिय संतों के दर्शनों को पुनः जीवंत किया जा सके, जो लोगों की भाषा में गाते थे। viii. शाही संरक्षण में मंदिरों में तमिल शैव भजनों का गायन भी शुरू किया । ix. चोलों ने भजनों को एकत्रित करने और उन्हें एक ग्रंथ (तेवरम) में व्यवस्थित करने की भी पहल की। x. चोल शासक परान्तक प्रथम ने एक शिव मंदिर में अप्पार , सम्बंदर और सुन्दरर की धातु प्रतिमाएं प्रतिष्ठित कराई थीं । xi. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (कोई भी 3 अंक निर्धारित किये जायेंगे।)		
25 .	**मुगल शासन के दौरान राज्य के साथ जुड़ाव ने वनवासियों के जीवन को कैसे परिवर्तित किया ? स्पष्ट प्रकार बदल कीजिए।** i. राज्य के लिए जंगल एक विध्वंसक स्थान था - उपद्रवियों के लिए शरणस्थली (मावास)। ii. वनवासी - यह शब्द उन लोगों को संदर्भित करता है जिनकी आजीविका वनोपज एकत्र करने, शिकार करने और स्थानान्तरित कृषि से आती है। iii. राज्य के लिए जंगल उपद्रवियों की शरणस्थली था। iv. बाहरी ताकतें अलग-अलग तरीकों से जंगल में प्रवेश करती हैं। v. वनवासियों से वसूले जाने वाले पेशकाश में प्रायः हाथियों की आपूर्ति भी शामिल होती थी । vi. यह शिकार राज्य की अपनी सभी प्रजा के लिए न्याय सुनिश्चित करने की अत्यधिक चिंता का प्रतीक था। vii. वाणिज्यिक कृषि का प्रसार एक महत्वपूर्ण बाह्य कारक था जिसने वनवासियों के जीवन को प्रभावित किया। viii. शहद, मोम और गोंद लाख जैसे उत्पादों की बहुत मांग थी और ये भारत से विदेशों में निर्यात की प्रमुख वस्तुएं बन गईं। ix. हाथियों को पकड़ कर बेचा गया। x. व्यापार में वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से विनिमय शामिल था। xi. पंजाब की लोहानी जनजाति भारत और अफगानिस्तान के बीच स्थल मार्ग से व्यापार में शामिल थी। xii. कई आदिवासी मुखिया अपने वंश के लोगों को सेना में भर्ती करके जमींदार और यहां तक कि राजा भी बन गए। xiii. असम में अहोम राजाओं के पास पायक थे । xiv. राज्य गठन की प्रक्रिया 16 वीं शताब्दी में ठोस हुई।	अध्याय 8, पृष्ठ 208-211	3

	xv. नए सांस्कृतिक प्रभाव वन क्षेत्रों में भी प्रवेश करने लगे। कुछ इतिहासकारों ने वास्तव में यह सुझाव दिया है कि कृषि समुदायों में इस्लाम की धीमी स्वीकृति में सूफी संतों (पीरों) की प्रमुख भूमिका थी। xvi. इस प्रकार वनवासियों को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ताने-बाने में एकीकृत किया गया। xvii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु कोई भी 3 अंक का मूल्यांकन किया जाना है। **या** **(ख) मुगल साम्राज्य में पंचायतों की भूमिका की व्याख्या कीजिए।** i. पंचायत का नेतृत्व मुखिया करता था जिसे मुकद्दम या मंडल के नाम से जाना जाता था , जिसका चयन बुजुर्गों और जमींदार की सहमति से किया जाता था । ii. ग्राम पंचायत वंशानुगत अधिकारों वाले बुजुर्गों की एक सभा थी iii. मिश्रित जाति वाले गांवों में पंचायत आमतौर पर एक विषम निकाय होती थी। iv. मुखिया तब तक अपने पद पर बने रहते थे जब तक उन्हें गांव के बुजुर्गों का विश्वास प्राप्त था। v. मुखिया का मुख्य कार्य लेखाकार या पटवारी की सहायता से गांव के खातों की तैयारी की देखरेख करना था । vi. पंचायत को अपना धन सामान्य वित्तीय पूल से प्राप्त होता है। vii. सामुदायिक कल्याण गतिविधियों जैसे नहर खोदने, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए किए जाने वाले व्यय भी इन निधियों से पूरे किए जाते थे। viii. पंचायतों को जुर्माना लगाने तथा समुदाय से निष्कासन जैसे अधिक गंभीर दंड देने का भी अधिकार था। ix. गाँव में जाति या वर्ण की अपनी अलग जाति पंचायत होती थी ।. x. राजस्थान में जाति पंचायतें विभिन्न जातियों के सदस्यों के बीच नागरिक विवादों का मध्यस्थता करती थीं। xi. वे भूमि पर विवादित दावों में मध्यस्थता करते थे, यह निर्णय लेते थे कि विवाह किसी विशेष जाति समूह द्वारा निर्धारित मानदंडों के अनुसार किया जाए या नहीं, यह निर्धारित करते थे कि गांव के कार्यों में किसको प्राथमिकता दी जाए, इत्यादि। xii. अधिकांश मामलों में, आपराधिक न्याय के मामलों को छोड़कर, राज्य जाति के निर्णयों का सम्मान पंचायत करता था। xiii. जमींदार के बीच संघर्ष में पंचायत का निर्णय अलग-अलग मामलों में भिन्न हो सकता है। xiv. अत्यधिक राजस्व मांग के मामलों में पंचायत अक्सर समझौते का सुझाव देती थी। xv. राजस्थान में जाति पंचायतें विभिन्न जातियों के सदस्यों के बीच नागरिक विवादों का मध्यस्थता करती थीं। xvi. राजस्थान और महाराष्ट्र - इसमें पंचायत को प्रस्तुत याचिकाएं शामिल हैं जिनमें जबरन कराधान और अवैतनिक श्रम (बेगार) की मांग के बारे में शिकायत की गई है।	अध्याय 8, पृष्ठ 202-204	3

	xvii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु मूल्यांकन किए जाने वाले कोई भी 3 अंक		
26.	**इस्तमरारी बन्दोबस्त लागू होने के बाद जमीदारों ने बकाया राशि (राजस्व) के भुगतान में चूक क्यों की ?** i. प्रारंभिक राजस्व मांगें बहुत अधिक थीं ii. यह उच्च मांग 1790 के दशक में लागू की गई थी, वह समय जब कृषि उपज की कीमतें कम थीं। iii. राजस्व अपरिवर्तनीय था, iv. सनसेट कानून के अनुसार राजस्व का भुगतान समय पर किया जाना था । v. स्थायी बंदोबस्त ने शुरू में जमींदार की रैयत से लगान वसूलने और अपनी जमींदारी का प्रबंधन करने की शक्ति को सीमित कर दिया । vi. रैयत जानबूझकर भुगतान में देरी करते थे। अमीर रैयत और गाँव के मुखिया - जोतदार और मंडल - ज़मींदार को मुसीबत में देखकर बहुत खुश होते थे । vii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु मूल्यांकन किए जाने वाले कोई भी 3 अंक	अध्याय 9, पृष्ठ 229-230	3
27.	**कल्पना कीजिए कि आपको 1857 के विद्रोह का विस्तृत इतिहास लिखने का काम सौंपा गया है। इसके लिए आप किन स्रोतों का उपयोग करेंगे? स्पष्ट किजिए।** i. हिन्दी, उर्दू और फ़ारसी में घोषणाएँ। ii. कला और साहित्य iii. रानी सुभद्रा की वीरता पर वीरतापूर्ण कविताएँ लिखी गईं कुमारी चौहान: “ खूब लाडी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी ” iv. ब्रिटेन में प्रसारित तस्वीरें, v. विद्रोही नेताओं द्वारा लिखे गए पत्र vi. आधिकारिक खाते - अंग्रेजों द्वारा लिखे गए खाते। vii. पत्र और डायरियाँ, viii. आत्मकथाएँ. ix. आधिकारिक इतिहास. x. अनगिनत ज्ञापन और नोट्स, स्थितियों का आकलन, और रिपोर्टें तैयार की गईं xi. ब्रिटिश अखबारों और पत्रिकाओं में प्रकाशित विद्रोह की कहानियों में विद्रोहियों की हिंसा का भयानक विवरण दिया गया था xii. ब्रिटिश और भारतीयों द्वारा निर्मित चित्रात्मक छवियां। xiii. पेंटिंग्स, पेंसिल चित्र, नक्काशी, पोस्टर, कार्टून, बाज़ार प्रिंट। xiv. 1859 में थॉमस जोन्स बार्कर द्वारा चित्रित "लखनऊ की राहत", xv. जोसेफ नोएल पैटन द्वारा लिखित “इन मेमोरियम”, xvi. मिस व्हीलर कानपुर में सिपाहियों से अपना बचाव करती हुई xvii. कैनिंग की क्षमा”, पंच, xviii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु	अध्याय 10, पृष्ठ 277-283	3

	कोई भी 3 बिंदु तक पहुंच बनाई जानी है।		
	खंड- ग **(दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न)**		
28.	**(क) स्तूप बौद्ध मान्यताओ और प्रथाओं से कैसे जुडे थे ? साँची स्तूप की संरचनात्मक विशेषताओं को उदाहरण सहित किजिए।** **उत्तर :** i. स्तूप बनाने की परंपरा भले ही बौद्ध काल से पहले की रही हो, लेकिन बाद में इनका संबंध बौद्ध धर्म से जुड़ गया। चूँकि इनमें पवित्र माने जाने वाले अवशेष रखे जाते थे, ii. स्तूपों का निर्माण उन स्थानों पर किया गया था जिन्हें पवित्र माना जाता था। iii. ऐसा इसलिए था क्योंकि बुद्ध के अवशेष, जैसे उनके शरीर के अवशेष या उनके द्वारा उपयोग की गई वस्तुएँ, वहाँ दफनाए गए थे। इन टीलों को स्तूप कहा जाता था। iv. बौद्ध स्तूपों का निर्माण बुद्ध के जीवन से जुड़े स्थानों पर किया गया था – जन्म (लुम्बिनी), ज्ञान प्राप्ति (गया), प्रथम उपदेश (सारनाथ) और उनके निर्वाण (कुशीनगर)। v. जब बुद्ध मर रहे थे , तब उन्होंने आनंद से कहा , "चार चौराहों पर तथागत के लिए एक थुप (पाली में स्तूप) बनाया जाना चाहिए ।" vi. अशोकवदन में उल्लेख है कि अशोक ने अपने द्वारा वितरित बुद्ध के अवशेषों पर स्तूपों का निर्माण कराया था (भरहुत , सांची और सारनाथ)। vii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (किसी भी 4 अंक का मूल्यांकन किया जाएगा) **सांची स्तूप की संरचनात्मक विशेषताएं** i. स्तूप मिट्टी का एक अर्ध-वृत्ताकार टीला (अंडा) था, लेकिन धीरे-धीरे अधिक जटिल होता गया। ii. अण्डा के ऊपर हर्मिका थी - बालकनी जैसी संरचना जो देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करती थी। iii. इससे मस्तूल - यस्ती उत्पन्न हुआ जिसके ऊपर छतरी या छतरी लगी हुई थी। iv. टीले के चारों ओर लगी रेलिंग पवित्र और धर्मनिरपेक्ष भागों को अलग करती है। v. सांची और बरहुत स्तूपों में बांस और लकड़ी की बाड़ जैसी पत्थर की रेलिंग देखी जा सकती है । vi. प्रवेशद्वार चार प्रमुख बिंदुओं पर स्थापित किये गये थे।	अध्याय 4, पृष्ठ 95-97, 99-103	4+4=8

	vii. बाद में, स्तूपों (अमरावती और शाहजी) के टीले की ढेरी) विस्तृत रूप से घुमावदार हो गई। viii. सांची की मूर्तिकला को जातक जैसे बौद्ध ग्रंथों के ज्ञान से समझा जा सकता है उदाहरण के लिए वेसंतरा तोरण पर जातक . ix. बुद्ध की जीवनी से परिचित होने से बुद्ध के चित्रण को मानव रूप में नहीं बल्कि प्रतीकों के रूप में समझने में मदद मिलती है, जो उनके जीवन की घटनाओं को दर्शाते हैं। x. खाली सीट - ध्यान xi. स्तूप – महापरिनिर्वाण xii. पहिया – पहला उपदेश xiii. बोधि वृक्ष – ज्ञानोदय xiv. इसमें गैर-बौद्ध, लोकप्रिय तत्वों की भी उपस्थिति है जो दृश्य को समृद्ध बनाती है। xv. शालभंजिका एक ऐसी स्त्री का शुभ रूपांकन है जिसके स्पर्श से वृक्षों में फूल खिलते हैं xvi. हाथी, घोड़े, बंदर और मवेशी सहित जानवरों को जीवंत दृश्य बनाने और आगंतुकों को आकर्षित करने के लिए उकेरा गया था xvii. हाथी जैसे जानवरों को शक्ति और बुद्धि का प्रतीक माना जाता था। xviii. छवि की पहचान माया - बुद्ध की माता / गजलक्ष्मी - हाथियों से जुड़ी सौभाग्य की देवी के रूप में की गई है। xix. कई स्तंभों पर सर्प की आकृति भी पाई गई है और संभवतः यह लोकप्रिय परंपराओं से ली गई है। xx. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (किसी भी 4 अंक का मूल्यांकन किया जाएगा) **या** **(ख) ''बौद्ध और गैर-बौद्ध तत्वों ने मिलकर एक भव्य साँची की रचना की। इस कथन की व्याख्या उदाहरणों सहित किजिए।** i. स्तूपों में बुद्ध के अवशेष रखे जाते थे और इन्हें बुद्ध और बौद्ध धर्म के प्रतीक के रूप में पूजा जाने लगा। ii. गैर-बौद्ध तत्वों की भी उपस्थिति है जो दृश्य को समृद्ध बनाती है। iii. साँची की कला और वास्तुकला प्राचीन भारतीय समाज की अंतर्दृष्टि प्रदान करती है: iv. साँची के शिलालेखों से विभिन्न सामाजिक समूहों द्वारा दिए गए दान का पता चलता है। v. अशोकवदन में उल्लेख है कि अशोक ने अपने द्वारा वितरित बुद्ध के अवशेषों पर स्तूपों का निर्माण कराया था (भरहुत , सांची और सारनाथ)। vi. सांची की मूर्तिकला को जातक जैसे बौद्ध ग्रंथों के ज्ञान से समझा जा सकता है उदाहरण के लिए वेसंतरा तोरण पर जातक .	अध्याय 4, पृष्ठ 95-103	8

	vii. बुद्ध की जीवनी से परिचित होने से बुद्ध के चित्रण को मानव रूप में नहीं बल्कि प्रतीकों के रूप में समझने में मदद मिलती है, जो उनके जीवन की घटनाओं को दर्शाते हैं। viii. खाली सीट - ध्यान ix. स्तूप – महापरिनिर्वाण x. पहिया – पहला उपदेश xi. बोधि वृक्ष – ज्ञानोदय xii. स्तूप स्वयं मिट्टी का एक अर्ध-वृत्ताकार टीला (अंडा) था, लेकिन धीरे-धीरे अधिक जटिल होता गया। xiii. अण्डा के ऊपर हर्मिका थी - बालकनी जैसी संरचना जो देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करती थी। xiv. इससे मस्तूल - यस्ती उत्पन्न हुआ जिसके ऊपर छतरी या छतरी लगी हुई थी। xv. टीले के चारों ओर लगी रेलिंग पवित्र और धर्मनिरपेक्ष भागों को अलग करती है। xvi. सांची और भरहुत स्तूपों में बांस और लकड़ी की बाड़ जैसी पत्थर की रेलिंग देखी जा सकती है । xvii. प्रवेशद्वार चार प्रमुख बिंदुओं पर स्थापित किये गये थे। xviii. शालभंजिका एक ऐसी स्त्री का शुभ प्रतीक था जिसके स्पर्श से वृक्षों में फूल खिलते थे xix. हाथी, घोड़े, बंदर और मवेशी सहित जानवरों की नक्काशी जीवंत दृश्य बनाने और आगंतुकों को आकर्षित करने के लिए की गई थी। xx. हाथी जैसे जानवरों को शक्ति और बुद्धि का प्रतीक माना जाता था। xxi. छवि की पहचान माया - बुद्ध की माता / गजलक्ष्मी - हाथियों से जुड़ी सौभाग्य की देवी के रूप में की गई है। xxii. कई स्तंभों पर सर्प की आकृति भी पाई गई है और संभवतः यह लोकप्रिय परंपराओं से ली गई है। xxiii. प्राचीन भारत की स्तूप वास्तुकला, विशेष रूप से सांची परिसर में उदाहरणस्वरूप, एक बहुमुखी सांस्कृतिक कलाकृति के रूप में विद्यमान है। xxiv. इसमें न केवल बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों को समाहित किया गया है, बल्कि शासकों की राजनीतिक आकांक्षाओं, समुदायों की सामाजिक गतिशीलता और उस समय की कलात्मक और तकनीकी उपलब्धियों को भी प्रतिबिंबित किया गया है। xxv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु कोई भी 8 अंक का मूल्यांकन किया जाएगा।		
29 .	**(क) भारतीय इतिहास में विजयनगर साम्राज्य के महत्व का वर्णन कीजिए।** i. विजयनगर में पाई गई संरचनाओं की विस्तृत श्रृंखला रायों की दृष्टि को प्रतिबिंबित करती है ;	अध्याय 7 पृष्ठ 184,	8

	ii. रायों का संसाधनों और धन पर नियंत्रण था और वे अपनी शक्ति का उपयोग कर सकते थे। ऐसी शानदार इमारतों के निर्माण के लिए श्रमिकों और कुशल कारीगरों की आवश्यकता होती है। iii. राजधानी - विजयनगर योजनाबद्ध तरीके से स्थान के संगठन को दर्शाता है और समकालीन सौंदर्यशास्त्र और वास्तुशिल्प विचारों के आत्मसात पर भी प्रकाश डालता है। iv. किलेबंदी की सात पंक्तियाँ जिनमें कृषि क्षेत्र भी शामिल थे, सुरक्षा और रक्षा के लिए चिंता का संकेत देती हैं । v. जलाशय और चैनल - राज्य की पहल से निर्मित कमलापुरम टैंक और हिरिया नहर, शुष्क भूभाग में जल संरक्षण के प्रति चिंता को दर्शाते हैं। vi. शहरी केन्द्र में सड़कें, मस्जिदें, मंदिर, कुएं और तालाब जैसी संरचनाएं तथा साहित्य में आम लोगों के घरों के संदर्भ व्यापार के प्रति उनके संरक्षण को दर्शाते हैं। vii. शाही केंद्र में कई इमारतें हैं जो राया के जीवन से जुड़ी हैं - उनके निवास के लिए महल, viii. प्रशासनिक परिषद की बैठकों के लिए लोटस महल, ix. हाथियों के अस्तबल, x. महानवमी डिब्बा का उत्सवों के दौरान अनुष्ठानिक महत्व था और सांस्कृतिक प्रदर्शन के दौरान रायों द्वारा नायकों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता था। xi. दर्शक हॉल xii. हजाराराम मंदिर तथा लगभग 60 अन्य मंदिर संभवतः उनके विश्वास और चुने हुए देवता की पूजा के सूचक थे । xiii. विजयनगर के रायों ने अपनी दिव्य स्थिति स्थापित करने और प्रजा के साथ संबंध स्थापित करने के लिए मंदिरों से संबंध बनाए। xiv. उन्होंने मंदिरों को अनुदान दिया और प्रार्थनाओं और उत्सवों का नेतृत्व किया xv. मंदिर परिसरों में गोपुरम और मंडपों का निर्माण करके मंदिर वास्तुकला को बढ़ाया । xvi. रायों के शासनकाल में विरुपाक्ष मंदिर का विस्तार किया गया तथा कृष्णदेव राय ने पूर्वी गोपुरम का निर्माण करवाया। xvii. विठ्ठल मंदिर: यह दर्शाता है कि किस प्रकार विजयनगर के शासकों ने साम्राज्यवादी संस्कृति के निर्माण के लिए विभिन्न परम्पराओं का सहारा लिया। xviii. मंदिर के गोपुरम से सीधी रेखा में रथ मार्ग फैले हुए थे, जहां व्यापारी अपनी दुकानें लगाते थे। xix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु मूल्यांकन हेतु कोई भी 8 प्रासंगिक बिंदु।	185, 186	
	या		
	(ख) **विजयनगर साम्राज्य की धार्मिक वास्तुकला परम्पराओं का वर्णन कीजिए।** i. विजयनगर की राजधानी के स्थान के चयन को प्रेरित किया होगा ।	अध्याय 7	8

	ii. पहाड़ियों ने बाली और सुग्रीव के राज्य को आश्रय दिया iii. पम्पादेवी का मंदिर जिसका संरक्षक देवता के साथ विवाह उत्सव आज भी मनाया जाता है। iv. विजयनगर पूर्व जैन मंदिरों की उपस्थिति। v. शासकों (पल्लव , चालुक्य , होयसल , चोल) ने मंदिर निर्माण को ईश्वर से पहचान करने के साधन के रूप में प्रोत्साहित किया और उन्हें शिक्षा के केंद्र के रूप में बढ़ावा दिया। vi. मंदिरों के निर्माण, मरम्मत और रखरखाव के लिए अनुदान लोकप्रिय समर्थन का स्रोत थे। vii. विजयनगर राय भगवान विरुपाक्ष की ओर से शासन करते थे जिनके नाम पर सभी शाही आदेश हस्ताक्षरित होते थे। viii. शासकों ने मंदिरों में अपने चित्र प्रदर्शित करके इन परंपराओं को और विस्तृत किया तथा मंदिरों में उनकी यात्राओं को राजकीय अवसर माना गया। ix. राय गोपुरम या शाही प्रवेशद्वार केन्द्रीय मंदिर के बुर्जों के सामने बौने लगते थे तथा दूर से ही मंदिर की उपस्थिति का संकेत देते थे । x. मंदिर परिसर के भीतर मंडप और लम्बे स्तंभयुक्त गलियारे थे । xi. कृष्णदेव राय के शासनकाल के दौरान विरुपाक्ष मंदिर का विस्तार किया गया, जिसमें मुख्य मंदिर के सामने हॉल और पूर्वी गोपुरम बनाया गया । xii. मंदिरों के हॉल में धार्मिक उत्सव और नृत्य, संगीत और नाटक के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए । xiii. विठ्ठल मंदिर, विजयनगर के शासकों द्वारा एक शाही संस्कृति के निर्माण का संकेत देता है । xiv. मंदिर के गोपुरम से सीधी रेखा में पक्की सड़कें फैली हुई थीं, जिनके किनारे स्तंभों वाले मंडप बने हुए थे, जिनमें व्यापारी अपनी दुकानें लगाते थे। xv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु मूल्यांकन हेतु कोई भी 8 प्रासंगिक बिंदु।	पृष्ठ 184, 185, 186	
30.	**(क) "गाँधीवाद राष्ट्रवाद में असहयोग आंदोलन महत्वपूर्ण था।" इस कथन को न्यायसंगत ठहराएँ।** i. गांधीजी का एक जननेता के रूप में उदय। ii. असहयोग आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक अभिजात्य आंदोलन से एक लोकप्रिय जन आंदोलन में बदल दिया। iii. सत्याग्रह और अहिंसा की अवधारणाओं की राष्ट्रव्यापी लोकप्रियता । iv. रॉलेट एक्ट और जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में असहयोग आंदोलन। v. स्वराज की मांग. vi. गांधीजी ने असहयोग और खिलाफत आंदोलन को एक साथ लाकर दोनों समुदायों को एकजुट किया।	अध्याय-11, पृष्ठ 290,291	8

	vii. एकजुट होकर, दो प्रमुख धार्मिक समुदाय अर्थात् हिंदू और मुस्लिम सामूहिक रूप से औपनिवेशिक शासन को समाप्त कर सकते हैं। viii. स्वदेशी और बहिष्कार को एक उपकरण के रूप में उपयोग करें। ix. छात्रों ने स्कूल, कॉलेज जाने से इनकार कर दिया। x. वकीलों को अदालतों में जाने से रोका गया, xi. मजदूर वर्ग हड़ताल पर चला गया। xii. आंध्र प्रदेश में जनजातियों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया xiii. अवध में किसानों ने कर देना बंद कर दिया। xiv. असहयोग, भारत और गांधीजी के जीवन में एक युग का नाम बन गया। xv. इसमें इनकार, त्याग और आत्म-अनुशासन शामिल था। xvi. यह स्वशासन के लिए प्रशिक्षण था। xvii. असहयोग आंदोलन के परिणामस्वरूप ब्रिटिश राज की नींव हिल गई। viii. फरवरी 1922 में, चौरी चौरा में पुलिस थानों को जलाने की अप्रिय घटना के कारण गांधीजी ने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया, जिसमें कई कांस्टेबल जलकर मर गए थे। xix. असहयोग आंदोलन के दौरान हजारों भारतीयों को जेल में डाल दिया गया और गांधीजी को मार्च 1922 में गिरफ्तार कर लिया गया, उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया और उन्हें छह साल के कारावास की सजा सुनाई गई। xx. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु कोई भी 8 अंक का मूल्यांकन किया जाएगा। **या** **(ख) ''गांधीजी को गरीबों के प्रति गहरी सहानुभूति के तहत एक 'जन नेता' के रूप में देखा जाने लगा।'' कथन का परख कीजिए।** i. फरवरी 1916 में बीएचयू के उद्घाटन के अवसर पर गांधीजी ने विशेष आमंत्रित अतिथियों से कहा था कि "भारत का तब तक उद्धार नहीं हो सकता जब तक आप अपने इस आभूषण को उतारकर भारत में अपने देशवासियों के लिए इसे सुरक्षित नहीं रख लेते।" ii. उनका मानना था कि मुक्ति केवल किसान के माध्यम से ही मिल सकती है। न तो वकील, न डॉक्टर, न ही धनी ज़मींदार इसे प्राप्त कर सकते हैं। iii. चंपारण, अहमदाबाद और खेड़ा के आंदोलनों ने गांधीजी को गरीबों के प्रति गहरी सहानुभूति रखने वाले राष्ट्रवादी के रूप में स्थापित किया। iv. 1921 में, दक्षिण भारत के दौरे के दौरान, गांधीजी ने गरीबों से जुड़ाव के लिए अपना सिर मुंडवा लिया और लंगोटी पहनना शुरू कर दिया। v. उनका नया रूप तप और संयम का प्रतीक भी बन गया। vi. चरखा ने गरीबों को अतिरिक्त आय उपलब्ध कराई और उन्हें आत्मनिर्भर बनाया। vii. गांधीजी भारतीय किसानों के लिए एक उद्धारकर्ता के रूप में प्रकट हुए, जो उन्हें उच्च करों और दमनकारी अधिकारियों से बचाएंगे और उनके जीवन में सम्मान और स्वायत्तता बहाल करेंगे।	अध्याय-11, पृष्ठ 292, 294	8

	viii. गरीबों, विशेषकर किसानों के बीच गांधीजी की लोकप्रियता उनकी तपस्वी जीवनशैली तथा धोती और चरखे जैसे प्रतीकों के चतुराईपूर्ण प्रयोग के कारण बढ़ी। ix. महात्मा गांधी जाति से व्यापारी थे और पेशे से वकील थे; लेकिन उनकी सरल जीवनशैली और अपने हाथों से काम करने के प्रति प्रेम ने उन्हें मेहनतकश गरीबों के साथ पूरी तरह से सहानुभूति रखने में सक्षम बनाया और बदले में, गरीबों ने भी उनके साथ सहानुभूति रखी। x. जमीनी स्तर पर रचनात्मक कार्यक्रम ने सामाजिक और आर्थिक सुधार को बढ़ावा दिया जिससे जन आंदोलन में आवश्यक अनुशासन और प्रशिक्षण उपलब्ध हुआ। xi. इसमें हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना शामिल था xii. महिलाओं और हरिजनों का उत्थान, xiii. श्रम की गरिमा xiv. आर्थिक आत्मनिर्भरता. xv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु मूल्यांकन किए जाने वाले कोई भी 8 प्रासंगिक बिंदु		
31.	**प्रभावती गुप्त और दंगुन गाँव** **(31.1)प्रभावती गुप्त द्वारा भूमि अनुदान किसे दिया गया था?** i.आचार्य को धार्मिक पुण्य के लिए भूमि अनुदान दिया गया। ii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु) **(31.2) यह स्रोत हमें महिलाओं द्वारा संपत्ति के स्वामित्व के बारे में क्या सूचित रता है?** i . रानी प्रभावती के पास जमीन थी और उन्होंने उसे दान भी दिया था। ii. धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र जैसे धार्मिक ग्रंथों के अनुसार महिलाओं को संपत्ति रखने की अनुमति नहीं थी। iii.यह नियम सर्वव्यापी नहीं था। iv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु) **(31.3) भूमि अनुदान प्राप्तकर्ताओं को क्या विशेषाधिकार दिए गए थे?** उत्तर: i. दंगुन गांव के निवासियों को अनुदान प्राप्तकर्ता के सभी आदेशों का पालन करने का निर्देश दिया गया। ii. इस गांव में सैनिकों और पुलिसकर्मियों का प्रवेश वर्जित था; iii. (यह) घास, बैठने के लिए पशुओं की खाल और भ्रमणशील शाही अधिकारियों को कोयला उपलब्ध कराने के दायित्व से मुक्त है;	अध्याय 2, पृष्ठ 41	1 1 2

	iv. किण्वनकारी शराब खरीदने और नमक खोदने (के शाही विशेषाधिकार) से छूट; v. खदानों और खदिरा वृक्षों के अधिकार से छूट; vi. फूल और दूध (आपूर्ति करने के दायित्व) से छूट; vii. (यह दान किया जाता है) साथ में छिपे हुए खजाने और जमा (और) का अधिकार viii. प्रमुख और लघु करों के साथ…" ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (कोई भी 2 अंक निर्धारित किये जायेंगे।)		
32 .	**यूरोप के लिए एक चेतावनी** **(32.1) यूरोपीय राजाओं को बर्नियर ने क्या चेतावनी दी?** **i.** बर्नियर ने चेतावनी दी थी कि यदि यूरोपीय राजा मुगल मॉडल का अनुसरण करेंगे तो उनके राज्य अच्छी तरह से खेती और आबादी से बहुत दूर होंगे, **ii.** यह उतना अच्छी तरह से निर्मित, उतना समृद्ध, इतना विनम्र और समृद्ध भी नहीं होगा, जितना हम उन्हें देखते हैं। **iii.** वे रेगिस्तान और एकांत के राजा बन जाएंगे, **iv.** वे भिखारियों और बर्बर लोगों के राजा बन जाएंगे **v.** हमें बड़े शहरों और बड़े बरोज़ (नगरों) को खराब हवा के कारण रहने लायक नहीं छोड़ना पड़ेगा, और **vi.** शहर बर्बाद हो जाएंगे, क्योंकि कोई भी उनकी मरम्मत का ध्यान नहीं रखेगा; **vii.** पहाड़ियों को छोड़ दिया जाएगा . viii. खेत झाड़ियों से भरे हुए हैं, या महामारी फैलाने वाले दलदलों से भरे हुए हैं। ix. बर्नियर ने यूरोपीय राजाओं को चेतावनी दी कि उन्हें किसी भी तरह से ताज के स्वामित्व का मुगल मॉडल नहीं अपनाना चाहिए, जो मुगल ग्रामीण इलाकों और किसानों की बर्बादी का कारण था। x. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु **(32.2) उन्होंने यूरोपीय राजाओं और मुगल सम्राटों की तुलना किस प्रकार की?** i. यूरोपीय मॉडल की समृद्धि पर जोर दिया गया है जबकि मुगल सम्राटों को बर्बर और भिखारियों का राजा कहा गया है। ii. यूरोपीय मॉडल की श्रेष्ठता पर बल दिया गया है जबकि मुगल सम्राटों को निम्न बताया गया है। iii. यूरोपीय राजा अन्यथा अमीर और शक्तिशाली हैं और उनकी सेवा बहुत बेहतर और अधिक शाही तरीके से की जाती है। iv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। (मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु) **(32.3). बर्नियर ने मुगल देहात का वर्णन कैसे किया?**	अध्याय 5, पृष्ठ 132	1 1 2

	i. बर्नियर ने मुगल ग्रामीण इलाकों की निराशाजनक स्थिति का चित्रण किया ii. उनके अनुसार यह दयनीय और बर्बाद स्थिति में था; iii. इसके खेत "झाड़ियों से भरे हुए" थे और iv. यह "महामारी दलदल" से भरा हुआ था। v. बर्नियर ने मुगल राज्य को एक शोषक राज्य के रूप में देखा, जिसमें अल्पसंख्यक अभिजात वर्ग ने अधीनस्थ आबादी के एक विशाल हिस्से पर अत्याचार किया और उस पर प्रभुत्व जमाया। vi. उनके अनुसार मुगल साम्राज्य में कोई मध्यम वर्ग नहीं था vii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु। (किसी भी 2 बिंदुओं तक पहुंच बनाई जानी है।)		
33 .	**कोई विभाजित निष्ठा नहीं हो सकती** **(33.1) जी.बी. पंत ने लोकतंत्र में आत्म-अनुशासन के महत्व पर जोर क्यों दिया?** उत्तर: i. लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति को आत्म-अनुशासन की कला में प्रशिक्षित होना चाहिए। ii. लोकतंत्र में व्यक्ति को अपनी कम और दूसरों की अधिक चिंता करनी चाहिए। iii. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु) **(33.2) निष्ठा का क्या अर्थ है?** i. सभी निष्ठाएं विशेष रूप से राज्य के प्रति केन्द्रित होनी चाहिए। ii. लोगों को केवल समुदाय और स्वयं पर ध्यान केंद्रित करना बंद कर देना चाहिए। iii. कोई भी विभाजित निष्ठा नहीं हो सकती। iv. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (मूल्यांकन हेतु कोई एक बिंदु) **(33.3) उनके अनुसार लोकतंत्र की सफलता की कुंजी क्या है?** i . गोविंद बल्लभ पंत ने तर्क दिया कि सफल होने के लिए व्यक्ति को आत्म-अनुशासन की कला में प्रशिक्षित होना चाहिए। ii. व्यक्ति को अपनी कम और दूसरों की अधिक चिंता करनी चाहिए। iii. कोई भी विभाजित निष्ठा नहीं हो सकती। 4. वफादारी विशेष रूप से राज्य के प्रति केन्द्रित होनी चाहिए। v. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (मूल्यांकन हेतु कोई दो अंक)	अध्याय 12 पृ. 330	1 1 2
	खंड- ङ **(मानचित्र-आधारित प्रश्न)**		
34.	**(34.1) भारत के दिए गए राजनीतिक रेखा मानचित्र पर निम्नलिखित को उपयुक्त प्रतीकों से चिह्नित करें और नामांकित करें:** (i) कालीबंगन - हड़प्पा स्थल	अध्याय 1	1

	(ii)(ए)विजयनगर- विजयनगर साम्राज्य की राजधानी- हम्पी/विजयनगर **या** (ii) (b) दिल्ली - मुगलों के अधीन क्षेत्र (iii) अमरावती – बौद्ध स्थल	पृष्ठ .2 अध्याय 7, पृष्ठ 17 अध्याय 8 पृष्ठ 214 अध्याय 4 पृष्ठ 95	1 1 1
	(34.2) भारत के इसी राजनीतिक रेखा मानचित्र पर 1857 के विद्रोह के केन्द्र के रूप में दो स्थानों को 'A' और 'B' से चिह्नित किया गया है। उन्हें पहचानिए और उनके पास खींची गई रेखाओं पर उनके सही नाम लिखिए। A- झांसी बी- बैरकपुर/ कलकत्ता **नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित अभ्यर्थियों के लिए हैं, प्रश्न संख्या 34 के स्थान पर:** (34.1) किन्हीं दो परिपक्व हड़प्पा स्थलों के नाम बताइए। हड़प्पा/मोहनजोदारो/लोथल/राखीगढ़ी/कालीबंगा/धोलावीरा/चन्हुदड़ो/नागेश्वर/बालाकोट/कोट दीजी/अमरी/सुक्तगेंडोर/बनावली कोई अन्य प्रासंगिक साइट (कोई 2 उल्लेखित करें)	अध्याय 10 पृष्ठ 275 अध्याय 1 पृष्ठ 2	2 2

	(34.2) (क) विजयनगर साम्राज्य की राजधानी का नाम बताइए। उत्तर: विजयनगर/हम्पी (मूल्यांकन हेतु कोई भी)	अध्याय 7 पृष्ठ 174	1
	या		
	(34.2) (ख) मुगल साम्राज्य के अधीन किसी एक क्षेत्र का नाम बताइए। आगरा/अजमेर/दिल्ली/पानीपत/लाहौर/काबुल/कंधार/आमेर कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (मूल्यांकन हेतु कोई भी)	अध्याय 8 पृ.214	1
	(34.3) भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के किन्हीं दो केन्द्रों के नाम बताइए। दिल्ली/खेड़ा/कलकत्ता/अमृतसर/बारडोली/चंपारण/अहमदाबाद/नागपुर/मद्रास/लखनऊ कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु (किन्हीं दो का मूल्यांकन किया जाना है)	अध्याय 11	2

61/S/1
61/S/2
61/S/3

प्रश्न सं. 34 के लिए

For question no. 34

भारत का रेखा-मानचित्र (राजनीतिक)
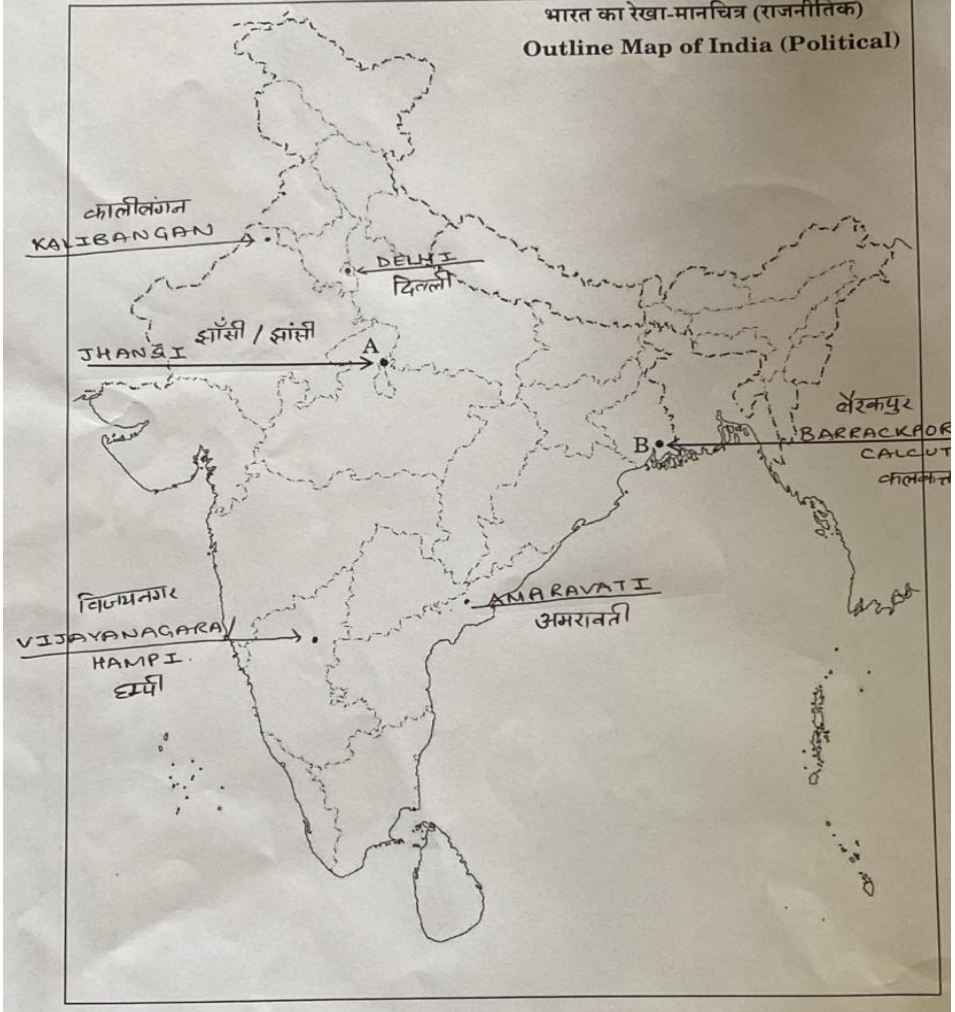
Outline Map of India (Political)